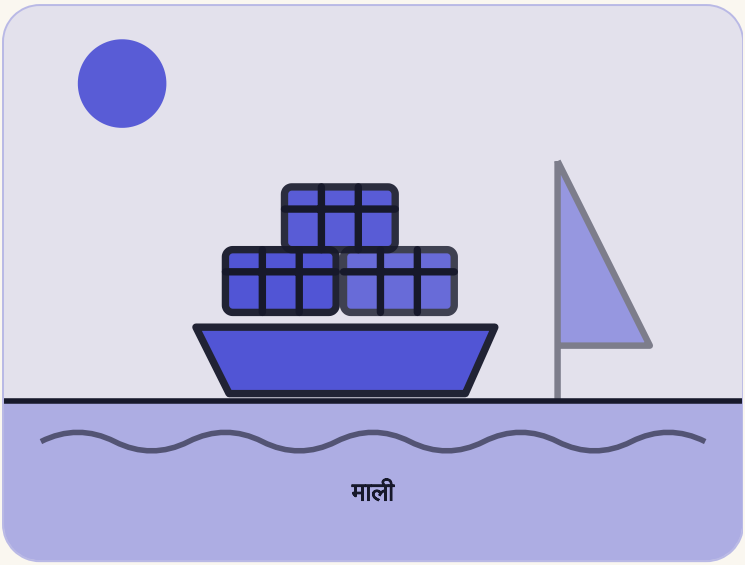

माली

वह पुस्तकालयाध्यक्ष जिसने टिम्बकटू की किताबें बचाईं

जब जिहादियों ने टिम्बकटू पर क़ब्ज़ा किया, तो एक पुस्तकालयाध्यक्ष और उनके साथियों ने लाखों प्राचीन पांडुलिपियाँ सुरक्षित पहुँचा दीं।

कहाँ टिम्बकटू

कौन अब्देल कादिर हैदारा, एक मालियाई पुस्तकालयाध्यक्ष, उनके भतीजे मोहम्मद तूरे और स्वयंसेवकों की एक टीम

कब 2012 से 2014

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

माली का टिम्बकटू कभी सीखने का एक मशहूर केंद्र था। सदियों तक वहाँ के परिवार खगोल, कविता, क़ानून, इतिहास और चिकित्सा पर हाथ से लिखी किताबें सँभालकर रखते रहे। 2012 में वे किताबें ख़तरे में थीं।

उस वसंत अल-क़ायदा से जुड़े विद्रोहियों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। उन्होंने बाद में मुस्लिम संतों की मज़ारें तोड़ दीं। अब्देल कादिर हैदारा, एक पुस्तकालयाध्यक्ष, को यक़ीन था कि वे अगला निशाना किताबों को बनाएँगे।

हैदारा विद्वानों के परिवार से थे। जब वे 17 साल के थे, उनके पिता गुज़र गए, और उन्होंने पांडुलिपियाँ जमा करने का उनका काम सँभाल लिया। सालों बाद, लीबिया के नेता के भेजे एक प्रतिनिधिमंडल ने उनका पूरा पुस्तकालय ख़रीदने की पेशकश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि यह माली की विरासत है।

> नहीं, यह मेरा पुस्तकालय है।
>
> मोहम्मद तूरे, हैदारा के भतीजे, एक जिहादी से जिसने कहा कि वे किताबें चुरा रहे हैं

रात-रात भर

इसलिए हैदारा और उनके भतीजे मोहम्मद तूरे ने किताबें छिपाना शुरू किया। उन्होंने बाज़ारों से लोहे के संदूक ख़रीदे, जब तक कि और बचे ही नहीं। बंद दरवाज़ों के पीछे स्वयंसेवकों ने टॉर्च की रोशनी में किताबें संदूकों में रखीं। जुलाई 2012 तक किताबें टिम्बकटू के आसपास सुरक्षित घरों में थीं।

फिर उन्हें राजधानी बमाको पहुँचाना था, जो 400 मील से ज़्यादा दूर थी। सितंबर से कूरियर किराये की 4x4 गाड़ियों में संदूक दक्षिण ले गए, चौकियों से गुज़रते हुए। जब सड़कें बंद हुईं, तो नावों ने किताबों को नाइजर नदी से नीचे पहुँचाया।

350,000	45	95%
हस्तलिखित ग्रंथ जो ले जाए गए, एक गिनती के अनुसार	ख़ाली किए गए पुस्तकालय	या उससे ज़्यादा टिम्बकटू की पांडुलिपियाँ बचीं, दो स्रोतों के अनुसार

यह ख़तरनाक था। जिहादियों ने एक रात तूरे को गिरफ़्तार किया और 24 घंटे रखा, जब तक हैदारा ने उसके पक्ष में बोलने वाले लोग नहीं जुटा लिए। बाद की एक यात्रा के बाद उन्हें बमाको में भी जेल में डाला गया। दानदाताओं ने बचाव के लिए लगभग 1 मिलियन डॉलर दिए।

क्या खोया, और क्या इंतज़ार में है

जनवरी 2013 में उग्रवादी शहर से भाग गए। जाते-जाते उन्होंने अहमद बाबा संस्थान में, जो एक सरकारी पुस्तकालय है, लगभग 4,200 पांडुलिपियाँ जला दीं। फ़रवरी तक 45 निजी पुस्तकालयों की लगभग सभी किताबें सुरक्षित थीं।

2014 में हैदारा ने कहा कि वे अभी किताबें घर नहीं ले जा सकते, क्योंकि उत्तर असुरक्षित था। हैम्बर्ग विश्वविद्यालय का एक पन्ना, जो 2020 में अद्यतन हुआ, कहता है कि किताबें अब भी बमाको के आसपास संदूकों में थीं। वह कहता है कि नम जलवायु एक नया ख़तरा है।

कब क्या हुआ

- **1981** हैदारा के पिता गुज़र जाते हैं। 17 साल की उम्र में अब्देल कादिर उनका काम सँभालते हैं।
- **2012** अप्रैल में विद्रोही टिम्बकटू पर क़ब्ज़ा करते हैं। हैदारा की टीम किताबें छिपाना शुरू करती है।
- **2013** फ़रवरी तक लगभग सारी किताबें टिम्बकटू से निकल चुकी हैं। अहमद बाबा संस्थान में लगभग 4,200 जल जाती हैं।
- **2014** हैदारा कहते हैं कि वे अभी किताबें घर नहीं ला सकते।
- **2020** हैम्बर्ग विश्वविद्यालय का एक पन्ना कहता है कि किताबें अब भी बमाको के पास संदूकों में हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

हैदारा इन सारी किताबों के मालिक नहीं थे। परिवारों ने उन पर भरोसा किया था, और उन्होंने उस भरोसे को अपना कर्तव्य माना।

बचाव पूरा नहीं था। कुछ किताबें जल गईं, और जो बचीं वे इन स्रोतों के लिखे जाने तक घर से दूर थीं।

हमारी राय

कोई ख़ज़ाना तब सबसे सुरक्षित होता है जब बहुत से आम लोग उसे उठाने को तैयार हों।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 जो आपके पास है उसे समझिए

हैदारा जानते थे कि ये किताबें अफ़्रीका के लिखित इतिहास का हिस्सा हैं।

यह आज़माएँ: जानिए कि आपकी देखरेख में सबसे ज़रूरी क्या है, और पहले उसे बचाइए।

2 सबसे बुरे से पहले क़दम उठाइए

टीम ने संदूक ख़रीदे और किताबें तब छिपा दीं जब मुख्य ख़तरा आना बाक़ी था।

यह आज़माएँ: जब तक समय है, ख़तरे की तैयारी कर लीजिए।

3 काम बाँटिए

हैदारा, उनके भतीजे, स्वयंसेवकों, कूरियरों और दानदाताओं ने हर किसी ने अपना हिस्सा निभाया।

यह आज़माएँ: मदद माँगिए। बड़े काम को बहुत हाथ चाहिए।

4 **दूसरी योजना रखिए**

जब सड़कें बंद हुईं, तो नावों ने किताबें नदी से नीचे पहुँचाईं।

यह आज़माएँ: **पहला रास्ता बंद हो तो दूसरा तैयार रखिए।**

साथ ले जाने वाली एक बात

किसी पुस्तकालय को वही लोग बचा सकते हैं जिन्हें उसकी परवाह हो।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

National Geographic
The Brave Sage of Timbuktu: Abdel Kader Haidara (Joshua Hammer, 2014)

Mail & Guardian
Scroll smugglers: How Timbuktu's secret treasures were saved (2014)

University of Hamburg
Timbuktu manuscripts (page last updated 22 June 2020)

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और संख्याओं में अलग हैं। कितनी पांडुलिपियाँ: नेशनल जियोग्राफ़िक कहता है 45 पुस्तकालयों से 350,000; Mail & Guardian कहता है कि पुस्तकालयाध्यक्षों ने उसे लगभग 400,000 बताया; हैम्बर्ग विश्वविद्यालय कहता है लगभग 2,400 संदूक (और काम के एक चरण में लगभग 285,000 अलग-अलग वस्तुओं की गिनती) और कहता है कि पांडुलिपियाँ 35 से ज़्यादा निजी पुस्तकालयों और सरकारी अहमद बाबा संस्थान में थीं; कहानी 350,000 लेती है और कहती है कि एक गिनती के अनुसार। कितनी बचीं: Mail & Guardian कहता है 95 प्रतिशत से ज़्यादा और हैम्बर्ग कहता है कम से कम 95 प्रतिशत; कहानी कहती है 95 प्रतिशत या उससे ज़्यादा। कितनी जलीं: नेशनल जियोग्राफ़िक कहता है कि उग्रवादियों के भागने से कुछ मिनट पहले अहमद बाबा संस्थान में 4,200 जला दी गईं; Mail & Guardian की एक तस्वीर-पंक्ति कहती है लगभग 4,000 जलीं; कहानी नेशनल जियोग्राफ़िक की 4,200 लेती है और लगभग कहती है। बचाव की समय-रेखा: नेशनल जियोग्राफ़िक फ़रवरी 2013 में ख़त्म होने वाले नौ महीनों का वर्णन करता है; हैम्बर्ग जून 2012 से जनवरी 2013 तक आठ महीने कहता है; कहानी वही तारीख़ें देती है जिन्हें वह किसी स्रोत से जोड़ सकती है: विद्रोहियों ने 1 अप्रैल 2012 को टिम्बकटू पर क़ब्ज़ा किया (हैम्बर्ग), क़ब्ज़े के लगभग एक महीने बाद संदूक ख़रीदे गए और जुलाई

तक सारी किताबें सुरक्षित घरों में थीं (नेशनल जियोग्राफ़िक), लंबी दूरी की ढुलाई सितंबर में शुरू हुई और AQIM के सड़कें बंद करने पर नावें इस्तेमाल हुईं (नेशनल जियोग्राफ़िक)। दूरी: नेशनल जियोग्राफ़िक कहता है बमाको 400 मील से ज़्यादा दूर; हैम्बर्ग कहता है 700 किलोमीटर से ज़्यादा। हैदारा का इतिहास (1981 में उनके पिता की मृत्यु जब वे 17 साल के थे, 1996 में लीबिया की पेशकश और उनका इनकार) नेशनल जियोग्राफ़िक से है। उद्धरण और तूरे की रात की गिरफ़्तारी, 24 घंटे की हिरासत, बाद में बमाको की जेल और उनकी अमेरिकी साझेदार स्टेफ़नी दियाकिते तथा यूरोप, अमेरिका और मध्य पूर्व के दानदाताओं द्वारा जुटाए गए 1 मिलियन डॉलर नेशनल जियोग्राफ़िक से हैं; Mail & Guardian संदूकों, 4x4 गाड़ियों, चौकियों और बमाको के अड्डे की पुष्टि करता है। हैदारा को यक़ीन था कि उग्रवादी किताबों को निशाना बनाएँगे, यह नेशनल जियोग्राफ़िक से है; हैम्बर्ग कहता है कि पांडुलिपियों का विनाश विद्रोहियों की प्राथमिकता बन गया। 2014 में किताबें घर न ले जा पाने की उनकी टिप्पणी नेशनल जियोग्राफ़िक से है; संदूकों, नम जलवायु और उससे ख़तरे के बारे में 2020 का कथन हैम्बर्ग से है। हम नहीं जानते कि 2020 के बाद किताबों का क्या हुआ। Smithsonian का पन्ना नहीं खुल सका (403); NPR और Pulitzer Center पर भरोसा नहीं किया गया। तीनों स्रोत बचाव को पुस्तकालयाध्यक्षों के अपने बयानों से बताते हैं। पिन टिम्बकटू दिखाता है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।